13 अव्यय

Indeclinable Words

अभी तक हमने संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया शब्दों के बारे में अध्ययन किया। इनमें देखा कि लिंग, वचन, काल आदि के आधार पर इन शब्दों के कई रूप बदलते हैं। इनमें परिवर्तन आता है। अत: इन्हें **विकारी** कहा जाता है।

इनके अतिरिक्त एक वर्ग ऐसे शब्दों का है जिनपर लिंग, वचन, काल आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता; जैसे—आज, तेज़, जल्दी, धीरे, कल, वाह, परंतु, लेकिन, ताकि आदि। अपरिवर्तित रहने के कारण इन्हें **अविकारी** या **अव्यय** कहा गया। इस प्रकार **अव्यय वे शब्द हैं जिनके रूप में लिंग, वचन और काल के प्रभाव से कोई परिवर्तन नहीं आता।**

अव्यय या अविकारी शब्द **पाँच प्रकार** के हैं—

अव्यय

1. क्रियाविशेषण
2. संबंधबोधक
3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक
5. निपात

1. क्रियाविशेषण

इन वाक्यों को पढ़िए—

मुंबई के लिए जहाज़ अभी रवाना होने ही वाला था। अचानक एक उद्घोषणा हुई— खराब मौसम के कारण जहाज़ निर्धारित समय से एक घंटा देर से उड़ान भरेगा। धीरे-धीरे यात्रियों में बेचैनी बढ़ने लगी।

अभी, अचानक, देर से, धीरे-धीरे शब्द क्रिया के बारे में कुछ विशेष जानकारी दे रहे हैं।

क्रिया के बारे में विशेष जानकारी देनेवाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

कोई क्रिया कहाँ, कब, कितनी, कैसे घट रही है— इसी आधार पर विभिन्न तथ्यों की जानकारी देनेवाले पदों के **चार भेद** हो सकते हैं—

Copyrighted mater

i. रीतिवाचक क्रियाविशेषण— जो पद, क्रिया किस ढंग से हुई, किस तरीके/रीति को अपनाया आदि के बारे में बताएँ, वे **रीतिवाचक क्रियाविशेषण** होते हैं। इनको पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'कैसे/किस प्रकार' आदि प्रश्नसूचक शब्द लगाकर देखिए, उत्तर में प्राप्त शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण होगा; जैसे—

- वह **तेज़** दौड़ा (कैसे दौड़ा? — तेज़)
- वह **ज़ोर से** रोया। (किस प्रकार रोया? — ज़ोर से)
- **जल्दी-जल्दी** पहुँचो। (कैसे पहुँचो? — जल्दी-जल्दी)

जल्दी-जल्दी, चुपके-चुपके, अचानक, ज़रूर, वस्तुतः, शायद आदि रीतिवाचक क्रियाविशेषण हैं।

ii. स्थानवाचक क्रियाविशेषण— जो क्रियाविशेषण, क्रिया कहाँ घट रही है, उस स्थान का संकेत करें, वे **स्थानवाचक क्रियाविशेषण** होते हैं। इनको पहचानने के लिए क्रिया के साथ प्रश्नसूचक शब्द लगाकर देखिए, उत्तर में प्राप्त शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण होगा; जैसे—

- आप **यहाँ** बैठिए। (कहाँ बैठिए? — यहाँ)
- उसका घर **ऊपर** है। (घर कहाँ है? — ऊपर)
- **इधर-उधर** नज़र घुमाओ। (नज़र कहाँ घुमाओ? — इधर-उधर)

यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, इधर-उधर, बाहर-भीतर, चारों तरफ़, पास, दूर, आगे, पीछे आदि स्थानवाचक क्रियाविशेषण हैं।

iii. कालवाचक क्रियाविशेषण— जो पद यह बताएँ कि कोई क्रिया कब घटी, वे **कालवाचक क्रियाविशेषण** होते हैं। इनको पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'कब' प्रश्नसूचक शब्द लगाकर देखिए, उत्तर में प्राप्त शब्द कालवाचक क्रियाविशेषण होगा; जैसे—

- वह **प्रतिदिन** गरीबों की सेवा के लिए जाती है। (कब जाती है? — प्रतिदिन)
- इसे **अभी** पूरा कर लीजिए। (कब पूरा कर लीजिए? — अभी)

कभी, अब, तब, आजकल, प्रतिदिन, रोज़, सुबह, शाम, रात, छह बजे, प्रतिवर्ष, प्रातः, नित्य, बहुधा आदि कालवाचक क्रियाविशेषण हैं।

iv. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण— जो क्रियाविशेषण क्रिया की मात्रा या परिमाण की ओर संकेत करें, वे **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण** होते हैं। इनको पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'कितना/कितनी' प्रश्नसूचक शब्द लगाकर देखिए, उत्तर में प्राप्त शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण होगा; जैसे—

- वह **थोड़ा** चल सकती है। (कितना चल सकती है? — थोड़ा)
- वह **ज़्यादा** खाता है, जो ठीक नहीं। (कितना खाता है? — ज़्यादा)

अधिक, अल्प, बहुत, कम आदि परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं।

Copyrighted m

- कुछ संज्ञाएँ प्रत्यय/निपात/किसी शब्द का सहारा लेकर समास बन जाती हैं और ये समास क्रियाविशेषण का कार्य करते हैं। इन्हें **यौगिक क्रियाविशेषण** भी कहते हैं।
  * छात्रों को कक्षा में **ध्यानपूर्वक** सुनना चाहिए।
    यहाँ **ध्यानपूर्वक** क्रियाविशेषण की तरह कार्य कर रहा है।
- कुछ शब्द विशेषण और क्रियाविशेषण—दोनों की तरह प्रयुक्त होते हैं। उनके प्रयोग से निर्णय लें कि वे क्या हैं? जैसे—
  * वह बच्चा **प्यारा** है। (विशेषण)
  * वह बच्चा **प्यारा** लगता है। (क्रियाविशेषण)
- एक ही वाक्य में एकाधिक क्रियाविशेषण हो सकते हैं—
  * हमें **वहाँ जल्दी** पहुँचना होगा।
    वहाँ — स्थानवाचक क्रियाविशेषण। **जल्दी** — रीतिवाचक क्रियाविशेषण।

यह भी जानें...

कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक क्रियाविशेषण की कोटि में न आनेवाले अन्य सभी क्रियाविशेषण रीतिवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं। कुछ रीतिवाचक क्रियाविशेषण इस प्रकार हैं—सहसा, हाथोंहाथ, परिश्रमपूर्वक, अवश्य, निस्संदेह, शायद, संभवतः, अकसर, क्यों, किसलिए, न, नहीं, सचमुच, बिलकुल, हाँ, अचानक, एकाएक आदि।

हमने सीखा

- **अव्यय** वे शब्द हैं जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता।
- अव्यय पाँच प्रकार के हैं—

अव्यय

1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक 3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक 5. निपात

- क्रियाविशेषण शब्द क्रिया के बारे में विशेष जानकारी देते हैं।
- क्रियाविशेषण चार प्रकार के हैं—

क्रियाविशेषण

रीतिवाचक स्थानवाचक कालवाचक परिमाणवाचक

* कभी-कभी निश्चित क्रियाविशेषण के अतिरिक्त अन्य शब्द भी क्रियाविशेषण की तरह काम करते हैं।

अभ्यास

पहचान और प्रयोग पर आधारित

बताइए

1. विकारी और अविकारी शब्दों में अंतर बताइए।
2. क्रियाविशेषण के सभी भेदों का एक-एक उदाहरण बताइए।
3. क्रियाविशेषण के कितने भेद हैं?
4. रीतिवाचक क्रियाविशेषण कौन-कौन से हैं?

लिखिए

1. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियाविशेषण छाँटिए और उनके भेद लिखिए—

	क्रियाविशेषण	भेद
i. आप जल्दी आइए।	....	....
ii. वह यहाँ पहुँच गया।	....	....
iii. आज मौसम अच्छा है।	....	....
iv. बाज़ार जाकर अभी दवा ले आओ।	....	....
v. हाथी बहुत तेज़ भागा।	....	....
vi. मुझे परसों जाना है।	....	....
vii. पिता जी उधर चले गए हैं।	....	....
viii. हमने फ़िल्म का भरपूर आनंद लिया।	....	....
ix. हरियाली चारों ओर फैली है।	....	....
x. मैं हर सप्ताह एक प्रोजेक्ट बनाता हूँ।	....	....

2. निम्नलिखित वाक्यों में आए रिक्त स्थानों में सही क्रियाविशेषण शब्द लिखिए—

i. सृष्टि .... बोलती है।

ii. विपुल .... खेलता है।

iii. .... आँधी चल रही है।

iv. वह .... खाता है।

v. बहुत देर से काम कर रहे हो, ... आराम कर लो।

Copyrighted material

क्रियाकलाप

छात्रों को उनकी मनपसंद कहानी लिखने को कहिए। छात्र अपनी कहानी को कक्षा में सुनाइए। अन्य छात्र उस कहानी में आए क्रियाविशेषण शब्द अपनी कॉपी में लिखिए।

पता लगाइए

इन वाक्यों में कौन-कौन से क्रियाविशेषण हैं—

i. वह ईमानदारी से काम करता है।

ii. उससे गिलास अनजाने में टूट गया।

2. संबंधबोधक अव्यय

नदी के किनारे एक उद्यान था जिसमें छोटा-सा घर था। एक तरफ़ कछार में बदल जाता है। कछार के पास ही कुचाने झील है।

उपर्युक्त वाक्यों में **के किनारे, के पास** क्रियाविशेषण जैसे दिखते हैं, परंतु ये 'नदी' तथा 'कछार' से संबद्ध हैं, अतः ये संबंधबोधक अव्यय हैं। संबंधबोधक अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्य के संज्ञा/सर्वनाम पदों से संबंध बताते हैं।

- हमारे घर **के पास** अमलतास के पेड़ लगे हैं।
- बच्चे माँ **के साथ** बाज़ार गए हैं।

Copyrighted material

कुछ अव्यय इस प्रकार हैं—

1. **कालसूचक के रूप में** — से पहले, से पूर्व, के बाद, के उपरांत आदि।
2. **स्थानसूचक के रूप में** — के भीतर, के बाहर, के अंदर, के ऊपर आदि।
3. **दिशासूचक के रूप में** — के पास, के नज़दीक, के चारों ओर, के समीप आदि।
4. **विरोधसूचक के रूप में** — के विपरीत, के प्रतिकूल, के विरुद्ध, के खिलाफ़ आदि।
5. **समानतासूचक के रूप में** — के समान, के जैसा, के बराबर, की तरह आदि।
6. **साधनसूचक के रूप में** — के ज़रिए, के द्वारा, के सहारे, के कारण आदि।
7. **हेतुसूचक के रूप में** — की खातिर, के लिए, के कारण, हेतु आदि।
8. **संगसूचक के रूप में** — के संग, के साथ, सहित आदि।
9. **पृथकतावाचक के रूप में** — से हटकर, से दूर, से अलग आदि।

- क्रियाविशेषण की तरह ही यह भी काल, स्थान या दिशा का बोध करवाते हैं—

  * राम घर **के अंदर** बैठा है।

  यहाँ **के अंदर** संबंधबोधक है क्योंकि घर (संज्ञा) के साथ संबंध है जबकि 'राम अंदर बैठा है' में क्रिया कहाँ हो रही है? इस प्रश्न का उत्तर मिलता है— अंदर। अतः 'अंदर' क्रियाविशेषण है।

- संबंधबोधक अव्ययों का प्रयोग हमेशा परसर्ग अथवा कारकीय विभक्ति— **के, की, से** आदि के साथ ही होता है, नहीं तो ये संज्ञा, विशेषण या क्रियाविशेषण बन जाएँगे।

हमने सीखा

- संबंधबोधक अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्य के संज्ञा/सर्वनाम पदों से संबंध बताते हैं।
- संबंधबोधक काल, दिशा, विरोध, साधन, समानता आदि का बोध कराते हैं।

अभ्यास

पहचान और प्रयोग पर आधारित

बताइए

1. संबंधबोधक शब्द क्या बताते हैं?
2. संबंधबोधक और क्रियाविशेषण में क्या अंतर है?

लिखिए

1. **उपयुक्त संबंधबोधकों से रिक्त स्थान भरिए—**
   - i. पेड़ के .... मोर नाच रहा है।
   - ii. तुम्हारे .... कौन आ रहा है?
   - iii. मुझे लाली की .... नीली फ्रॉक अच्छी लगी।
   - iv. नहाने के लिए हमें नदी के .... जाना पड़ेगा।
   - v. कुछ भी खाने से .... हाथ धो लेने चाहिए।
   - vi. घर के .... का बूढ़ा पेड़ गिर गया।
   - vii. धन के .... कोई नहीं पूछता।
2. **निम्नलिखित संबंधबोधकों का उपयोग करते एक अनुच्छेद लिखिए—**

   के भीतर, के सहारे, के कारण, के साथ, के द्वारा

   ....

   ....

   ....

   ....

क्रियाकलाप

विभिन्न संबंधबोधक शब्दों की परचियाँ बनाइए। जिस छात्र के पास जो परची आए वह उसे अभिनय करके बताए। अन्य छात्र पहचानिए और उससे वाक्य बनाइए।

Copyrighted materia

3. समुच्चयबोधक

नृत्य, संगीत और कला के विभिन्न रूप मनोरंजन के रचनात्मक व पुष्ट स्वरूप हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि संगीत की सुरम्य धुनों का प्रभाव मानव मन पर ही नहीं अपितु पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधों पर भी होता है। मनोरंजन जीवन के लिए आवश्यक है परंतु इसके लिए सजग रहना आवश्यक है।

उपर्युक्त अनुच्छेद में **और**, **व**, **कि**, **तथा**, **परंतु** शब्द दो पदों, पदबंधों अथवा वाक्यों को जोड़ रहे हैं।

जो अव्यय दो शब्दों, दो पदबंधों, दो वाक्यों को आपस में संयोजित (जोड़ने का भाव) करते हैं, वे समुच्चयबोधक या योजक कहलाते हैं।

समुच्चयबोधक के भेद

समुच्चयबोधक जोड़ने (और, एवं) के अतिरिक्त विरोध बताने का कार्य (लेकिन, परंतु); कारण, परिणाम बताने का कार्य (इसलिए, अतः, क्योंकि); विकल्प बताने का कार्य (या, अथवा, चाहे) भी करते हैं।

इन योजकों के **दो भेद** किए जा सकते हैं—

समुच्च्यबोधक

समानाधिकरण | **व्यधिकरण**

i. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक**— ये ऐसे योजक हैं जो दो समान स्तरवाले अंशों को जोड़ने का कार्य करते हैं; जैसे—और, तथा, किंतु, इसलिए।

क. जोड़ने का कार्य — और, तथा, एवं।
* कृष्ण **और** सुदामा संदीपन गुरु के यहाँ पढ़ते थे।
* वह बाज़ार गया **और** फल लाया।

ख. विरोधदर्शक — पर, परंतु, अपितु, बल्कि, लेकिन, किंतु, मगर।
* वह परिश्रमी तो है **परंतु** प्रतिभाशाली नहीं।
* उसने आने को कहा था **मगर** आया नहीं।

ग. विकल्प — या, अथवा, अन्यथा, न कि, या...या, नहीं तो।
* खाने पर ध्यान दो **अन्यथा** बीमार हो जाओगे।
* **या** तो तुम चले आना **या** मैं जाऊँगी।

घ. परिणामदर्शक — अतः, इसलिए, फलतः।
* मेहनत की थी, **अतः** सफलता भी मिल गई।
* कोशिश नहीं की **इसलिए** चुनाव हार गया।

Copyrighted mater

ii. **व्यधिकरण समुच्चयबोधक**— ये योजक आश्रित वाक्यों को जोड़ते हैं—

क. हेतुबोधक — क्योंकि, इसलिए, चूँकि, इस कारण।

✻ उसे पौधे खरीदने थे **इसलिए** नर्सरी गया है।

ख. संकेतबोधक — यद्यपि...तथापि, यदि...तो, चाहे...तो भी।

✻ **यद्यपि** काम मुश्किल है **तथापि** करने की कोशिश करूँगा।

ग. स्वरूपबोधक — अर्थात, मानो, यानी, यहाँ तक।

✻ ऐसा लगा **मानो** तेज़ आँधी आएगी।

घ. उद्देश्यबोधक — ताकि, जिससे, कि।

✻ उसने दिन-रात काम किया **जिससे** अपने बच्चे का इलाज करवा सके।

- समानाधिकरण और व्यधिकरण दोनों में 'इसलिए' योजक आता है, अतः उनके प्रयोग को समझना चाहिए और उसी आधार पर समानाधिकरण या व्यधिकरण का भेद करना चाहिए।

समानाधिकरण में 'इसलिए' परिणाम को दर्शाता है जबकि व्यधिकरण में 'इसलिए' 'इस कारण' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। निम्नलिखित उदाहरणों से स्थिति स्पष्ट है—

✻ वर्षा हो रही थी **इसलिए** नहीं आ सका।

इस वाक्य में 'इसलिए' परिणाम के अर्थ में आ रहा है, अतः समानाधिकरण है।

✻ वह विद्यालय इसलिए आया कि उसे अध्यापक से मिलना था।

यहाँ 'इसलिए' व्यधिकरण योजक है क्योंकि 'के कारण' के अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है।

यह भी जानें...

समानाधिकरण का योजक 'इसलिए' है जबकि व्यधिकरण का योजक 'इसलिए... कि' है।

हमने सीखा

- जो अव्यय दो शब्दों, दो वाक्यों को आपस में संयोजित करते हैं, वे समुच्चयबोधक या योजक कहलाते हैं।
- समुच्चयबोधक दो प्रकार के हैं—

समुच्चबोधक

समानाधिकरण   व्याधिकरण

अभ्यास

पहचान और प्रयोग पर आधारित

बताइए

1. समुच्चयबोधक कितने प्रकार के हैं?
2. 'इसलिए' का प्रयोग करते हुए समानाधिकरण और व्यधिकरण का एक-एक वाक्य बनाइए।

लिखिए

1. निम्नलिखित वाक्यों में खाली जगह पर सही समुच्चयबोधक लिखिए—
   - i. मैं आना चाहता हूँ .... मित्र को अकेला छोड़कर नहीं आ सकता।
   - ii. मैं बाहर गया था .... तुम्हारे जन्मदिन पर नहीं आ सका।
   - iii. खूब पढ़ो .... परीक्षा में अच्छे अंक मिलें।
   - iv. दाना नीचे है .... चिड़िया ऊपर।
   - v. आइसक्रीम खाओगे .... कस्टर्ड।
   - vi. वह गरीब तो है .... ईमानदार है।
   - vii. स्वस्थ रहना चाहते हो .... व्यायाम करो।
   - viii. मेरी बात मान लो .... बहुत पछताओगे।
2. कल्पना आधारित एक अनुच्छेद लिखिए जिसका आरंभ यदि...तो समुच्चयबोधक शब्द से हो हुए—

....

....

....

....

....

....

क्रियाकलाप

सभी छात्र/छात्राएँ समुच्यबोधक अव्यय से आरंभ होनेवाले वाक्यों की सूची चार्ट पर तैयार कीजिए।

Copyrighted mate

4. विस्मयादिबोधक

ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ फूटीं!

कितने सारी फलियाँ।

कितनी प्यारी फलियाँ!

पतली-चौड़ी फलियाँ!

उफ़ उनकी क्या गिनती!

उपर्युक्त काव्यांश में कवि सेम की बेल पर लगी ढेरों फलियों को देखकर आश्चर्यचकित है। ओह, उफ़ शब्द उसके विस्मय के भाव को प्रकट कर रहे हैं। ये विस्मयादिबोधक शब्द हैं।

विस्मय + आदि + बोधक यानी विस्मयादि भावों का बोध करानेवाले शब्द। हर्ष, विस्मय, घृणा, दुख, पीड़ा आदि मनोभावों को प्रकट करनेवाले पद विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

जैसे– 'छि:', 'ओह', 'अरे' आदि। ये शब्द किसी को सूचना देने के लिए नहीं होते, बल्कि उद्‌गार व्यक्त करने के लिए स्वयं ही मुख से निकलते हैं–

* विस्मयादिबोधक वाक्य के प्रारंभ में ही आते हैं।
* वाक्य के अन्य शब्दों से इनका कोई संबंध नहीं होता।
* शब्दों या वाक्यों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगता है।

विस्मयादिबोधक शब्द निम्नलिखित प्रकार के हैं–

1. विस्मय/आश्चर्य	—	अरे! हैं! क्या!	5. तिरस्कार/घृणा	—	छि: छि:! धिक्कार! धिक!
2. शोक/पीड़ा/ग्लानि	—	हाय! उफ़! ओ माँ!	6. चेतावनी	—	सावधान! होशियार! बचो!
3. हर्ष/उल्लास	—	अहा! वाह! बहुत अच्छा!	7. संबोधन	—	हे! अजी!
4. प्रशंसा	—	शाबाश! सुंदर!	8. संवेदना	—	राम राम! हाय!

हमने सीखा

- हर्ष, विस्मय, घृणा, दुख, पीड़ा आदि मनोभावों को प्रकट करनेवाले पद विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।
- ये स्वयं ही मुख्य से निकलते हैं।
- विस्मयबोधक शब्दों या वाक्यों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाते हैं।

अभ्यास

पहचान और प्रयोग पर आधारित

बताइए

1. विस्मयादिबोधक शब्द क्या प्रकट करते हैं?
2. तिरस्कार/घृणा को प्रकट करनेवाले शब्दों से दो वाक्य बनाइए।

लिखिए

1. खाली जगह पर उपयुक्त विस्मयादिबोधक लिखिए—

   i. .... कितनी सुंदर इमारत है।

   ii. .... कमीज़ बंदर ले गया।

   iii. .... कपकँपी आ रही है।

   iv. .... आगरे रेलवे क्रॉसिंग है।

   v. .... अब तक गए नहीं?

2. दिए गए विस्मयादिबोधकों से उपयुक्त वाक्य बनाकर लिखिए—

   i. उफ़! ....

   ii. आहा! ....

   iii. बाप रे! ....

   iv. वाह! ....

   v. अरे! ....

3. 'जब आपने साइकिल सीखी'—अपना अनुभव विस्मयादिबोधकों का प्रयोग करते हुए लिखिए—

   ....

   ....

   ....

   ....

क्रियाकलाप

कक्षा में बोर्ड पर विभिन्न परिस्थितियों से संबंधित चित्र लगाइए। छात्रों से पूछिए कि इन परिस्थितियों में वे किस विस्मयादिबोधकों का प्रयोग करेंगे। छात्रों से विभिन्न परिस्थितियों के चित्रों और उनके शब्दों का चार्ट भी बनवा सकते हैं।

Copyrighted material

5. निपात

गजनंदन तुरंत प्रिंसिपल के पास हाज़िर हो गए। बोले, "सर, मैं भी जाऊँगा।" प्रिंसिपल बोले, "तुम पहाड़ पर चढ़ोगे? तुमसे तो अपना शरीर ही नहीं सँभलता।" गजनंदन ने मुसकराते हुए जवाब दिया, "सर, शरीर अपनी फ़िक्र आप करेगा। हमें तो देखना यह है कि मेरे जाने से लाभ कितने होंगे।"

प्रस्तुत गद्यांश में **भी**, **तो**, **ही** शब्दों का प्रयोग बात पर बल देने के लिए किया गया है।

वे अव्यय जो किसी शब्द/पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष बल देते हैं, उन्हें निपात कहा जाता है।

अवधारणा (बल) देने के कारण इन्हें **अवधारक शब्द** भी कहा जाता है।

कुछ उदाहरण देखिए—

ही — आपको **ही** जाना होगा।

भी — तुम **भी** चलो तो अच्छा होगा।

तो — वह **तो** काम से बचता है।

तक — सुबह **तक** ठीक हो जाएगा।

मात्र — कह देने **मात्र** से काम नहीं चलेगा।

भर — होरी जीवन**भर** संघर्ष करता रहा।

निपात वाक्य के अर्थ को प्रभावित करते हैं; जैसे—

केवल मैं पूरी खाऊँगी। (अर्थ— सिर्फ़ वह पूरी खाएगी और कोई नहीं।)

मैं केवल पूरी खाऊँगी। (अर्थ— वह सिर्फ़ पूरी खाएगी और कुछ नहीं।)

हमने सीखा

- वे अव्यय जो किसी शब्द/पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष बल देते हैं, उन्हें निपात कहा जाता है।
- ये वाक्य के अर्थ को प्रभावित करते हैं।

Copyrighted material

अभ्यास

पहचान और प्रयोग पर आधारित

बताइए

1. निपात से आप क्या समझते हैं?
2. निपातों का प्रयोग करके दो वाक्य बोलिए।

लिखिए

1. निम्नलिखित वाक्यों में निपात शब्द छाँटिए—

i. दिनेश दिनभर पढ़ता रहता है। ......भर......

ii. मात्र दो रोटी का सवाल है। ....

iii. हमारे साथ आपको ही चलना है। ....

iv. उसे पढ़ना तक नहीं आता। ....

v. अब तुम भी काम कर लो। ....

2. रेखांकित अव्यय का भेद चुनिए—

i. बिना धन के कोई नहीं पूछता।
(क) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (ग) निपात (ख) समुच्चयबोधक अव्यय (घ) संबंधबोधक

ii. सत्य की हमेशा जीत होती है।
(क) कालवाचक क्रियाविशेषण (ग) स्थानवाचक क्रियाविशेषण
(ख) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (घ) समुच्चयबोधक अव्यय

iii. तुम भी नहीं गए।
(क) निपात (ख) क्रियाविशेषण (ग) संबंधबोधक (घ) योजक

iv. साधना ने कहा कि वह वहीं पहुँच जाएगी।
(क) समुच्चयबोधक (ख) समानाधिकरण समुच्चयबोधक
(ग) व्यधिकरण समुच्चयबोधक (घ) संबंधबोधक

v. वह आया था लेकिन चुप रहा।
(क) समानाधिकरण योजक (ख) व्यधिकरण योजक (ग) रीतिवाचक क्रियाविशेषण (घ) निपात

क्रियाकलाप

तो, ही, भी, मात्र का प्रयोग करके कुछ वाक्यों की सूची बनवाइए। अब प्रत्येक वाक्य में निपातों का स्थान बदलकर वाक्य पुनः लिखने को कहिए। छात्र अपने-अपने वाक्य कक्षा में पढ़कर सुनाएँगे। अन्य छात्र बताएँगे कि निपातों का स्थान बदलने से वाक्य के अर्थ में क्या बदलाव आया है।